

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

❖ खुलासा ❖

किताब खुलासा वानी हकी सूत फजर की ।
रुहें अर्स की दिल दे देखो ॥

खुलासा फुरमान का

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए ।
किए हादी ने जाहेर, याही मगज^१ मुसाफ^२ के ॥१॥
ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें विचार ।
रुहें हक सूत दिल में लई, छोड़ी दुनियाँ कर मुरदार ॥२॥
चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम ।
हक अर्स वाहेदत^३ में, हुआ रोसन दिन खसम ॥३॥
बड़ाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन ।
खोले द्वार खिलवत के, एही कुन्जी बका वतन ॥४॥
खुले द्वार सब अर्सों के, एही रुह अल्ला इलम ।
एही लदुन्नी खुदाई, ए कौल हक हुकम ॥५॥
ए कलाम आए हक से, ए नुकता कह्या जे ।
ए जानें विचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए ॥६॥
किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अर्स से रुहें फरिस्ते ।
मोमिन मुतकी^४ ए सुन के, रहे न सकें जुदे ॥७॥

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरिफ करें न सहर ।
 रहें फरिस्ते और दुनियाँ, ए लिख्या तीनों का मजकूर^१ ॥८॥
 देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए ।
 रहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियाँ खुदा हवाए ॥९॥
 ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत ।
 बड़ी बड़ाई रहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत ॥१०॥
 नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन^२ ।
 कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन ॥११॥
 ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत ।
 रहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत ॥१२॥
 ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान ।
 सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान ॥१३॥
 जाहेर सिपारे आठमें, लिख्या पैदा आदम हवाए ।
 अबलीस^३ लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह ॥१४॥
 भया निकाह^४ आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस ।
 ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस ॥१५॥
 तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे ।
 सो फैल^५ कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके^६ ॥१६॥
 पैदास बीच अबलीस कह्या, ए जो आदम की नसल ।
 पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां एह अकल ॥१७॥
 कह्या कुलफ^७ आड़े ईमान के, हवाई का देख ।
 दुनी का लिख्या बेवरा, सो ए कहूं विवेक ॥१८॥
 राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम ।
 सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम ॥१९॥

कह्या सिजदा आदम पर, अजाजीलें फेर्या फुरमान ।
 सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान ॥२०॥
 असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान ।
 पातसाही अबलीस दिल पर, जो करत है सैतान ॥२१॥
 गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत ।
 दूढ़ें दज्जाल को बाहेर, पावें ना लिखी इसारत ॥२२॥
 अबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर ।
 ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर ॥२३॥
 चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत^१ अजाजील^२ ।
 राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील ॥२४॥
 बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक ।
 दे कुलफ आड़े ईमान के, किए सब हवा के तअलुक^३ ॥२५॥
 तोड़ हवा कुलफ ले ईमान, सोई कह्या सिरदार ।
 हवा तरक^४ कर लेवे तौहीद^५, ए बल पैगंमरी हुसियार ॥२६॥
 पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस ।
 लैने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस ॥२७॥
 सिपारे आठमें मिने, जहूद^६ नसारे^७ जुदे पड़े ।
 त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े ॥२८॥
 कह्या अर्स दिल महंमद का, ए पूजें सब पत्थर ।
 माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर ॥२९॥
 लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह ।
 लोक दूढ़े बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे^८ अपनी राह ॥३०॥
 आकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत ।
 तो आकीन उठ्या सबन से, जो आए पोहोंची सरत ॥३१॥

१. वैकुंठ । २. विष्णु । ३. सम्बन्ध । ४. छोडना । ५. एक अद्वैतवाद । ६. यहूदी । ७. ईसाई (मिसर देश की जनता) ।
 ८. आधीन ।

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत^१ ।
 लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें ना पोहोंची कयामत ॥३२॥
 दिल मोमिन अर्स कह्या, कह्या दुनी दिल सैतान ।
 ए जाहेर इन बिध लिख्या, आरिफ^२ क्यों न करें बयान ॥३३॥
 जो कोई दुनियाँ कुंन से, आए न सके मांहे अर्स ।
 जो रूहे फरिस्ते उतरे, सोई अर्सा के वारस ॥३४॥
 रूहे आइयां जुदे ठौर से, और जुदा ही चलन ।
 दुनियाँ राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमिन ॥३५॥
 मोमिन रूहे करें कुरबानियाँ, और मता वजूद समेत ।
 छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन हेत ॥३६॥
 अर्स कह्या दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर ।
 आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर ॥३७॥
 दुनी दिल पर अबलीस^३, दिल मोमिन अर्स हक ।
 कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक ॥३८॥
 ए देखें दिल अर्स मोमिन, अर्स हक बिना होए क्यों कर ।
 एह विचार तो न करे, जो कुलफ^४ कहे दिलों पर ॥३९॥
 बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अर्स में तन ।
 यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अर्स दिल मोमिन ॥४०॥
 पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ ।
 कह्या दरिया हैवान^५ का, समझ ना करे एक हरफ ॥४१॥
 होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक ।
 कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियाँ अपनी मत माफक ॥४२॥
 इत सहूर दुनी का ना चले, सुरिया^६ छोड़े ना इनों अकल ।
 सरभर^७ करे मोमिन की, जिनकी अर्स असल ॥४३॥

१. विरासत संबंधी आदेश पत्र, उत्तराधिकार पत्र । २. विद्वान, इलम के जानकार एवं परमात्मा को पहचाननेवाले ।

३. नारद । ४. ताला । ५. पशुत्व - जानवर । ६. ज्योति सरूप । ७. बराबरी ।

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ ।
 डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत जमात ॥४४॥
 पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहमद सिरदार ।
 जो रूहें कही दरगाह^१ की, बीच बका बारे हजार ॥४५॥
 ढूढ़ पाए ना पकड़े मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर ।
 जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर ॥४६॥
 दिल मोमिन अर्स कह्या, बड़ा बेवरा किया इत ।
 दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत ॥४७॥
 दुनी न छोड़े तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी ।
 दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी ॥४८॥
 राह दोऊ जुदी पड़ी, दोऊ एक होवें क्योकर ।
 तरक^२ करी जो मोमिनों, सो हुआ दुनी का घर ॥४९॥
 मोमिन उतरे अर्स से, सो अर्स बिलंदी नूर ।
 ए जो रूहें कहीं दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर ॥५०॥
 रूहें अर्स अजीम^३ की, जाकी हक हादी सों निसबत ।
 ए हमेसा बीच अर्स के, हक जात वाहेदत ॥५१॥
 रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन ।
 बड़ी दरगाह अर्स अजीम की, जित असल रूहों के तन ॥५२॥
 ए हुकमें कजा^४ करी, अव्वल से आखिर ।
 हक अर्स मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर ॥५३॥
 करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन ।
 वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमिन ॥५४॥
 मोमिनों के माल का, दावा किया सबन ।
 तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स दिन ॥५५॥

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान ।
 दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान ॥५६॥
 अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन ।
 ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन ॥५७॥
 रहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत ।
 ए जाने अर्स अरवाहें, जिन मोमिनो निसबत ॥५८॥
 और गिरो फरिस्तन की, जिनका कायम वतन ।
 दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरो इन ॥५९॥
 और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल ।
 दावा किया मोमिन का, जो दुस्मन अबलीस असल ॥६०॥
 लिख्या सिपारे चौदमें, गिरो भांत है तीन ।
 महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन ॥६१॥
 किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत^१ तरीकत^२ हकीकत^३ ।
 हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत ॥६२॥
 हकीकत सों समझावना, समझे इसारत सों मोमिन ।
 हक सूरत दृढ़ कर दर्ई, तब दिल अर्स हुआ वतन ॥६३॥
 और राह जो तरीकत, गिरो फरिस्तों बंदगी कही ।
 सो समझे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत^४ सही ॥६४॥
 तीसरी गिरो सरीयत से, जो करसी जहेल^५ जिदाल^६ ।
 सो समझेंगे जिदैसों^७, क्या करें पड़े बंध दज्जाल ॥६५॥
 ए पड़े सब जानत हैं, दिल पर दुस्मन पातसाह ।
 ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह ॥६६॥
 कुरान पड़े चलें सरीयत, करें दावा मोमिनो राह ।
 पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा ॥६७॥

मोमिन दुनी ए तफावत^१, ज्यों खेल और देखनहार ।
मोमिन मता हक वाहेदत^२, दुनियां मता मुरदार ॥६८॥
सबों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान ।
वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूं पेहेचान ॥६९॥
कह्या दावा सब का तोड़्या, दिया मता मोमिनों को ।
लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों ॥७०॥
सिपारे सताईस में, लिखे दुनी के सुकन ।
ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद^३ आब बिन ॥७१॥
मोको पाक होए सो छूड़यो, यों केहेवे फुरमान ।
करे गुसल तौहीद आब^४ में, इन पाकी पकड़ो कुरान ॥७२॥
सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत ।
सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपे मुसाफ मारफत ॥७३॥
सो सरीयत को है नहीं, ए तो खड़े जाहेर ऊपर ।
एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर ॥७४॥
लिख्या कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत ।
एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित ॥७५॥
महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत ।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत ॥७६॥
एक फिरका नाजी कह्या, जित लिखी हक हिदायत^५ ।
एक दीन किया चाहे, एही मोमिन वाहेदत ॥७७॥
बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत ।
होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत^६ ॥७८॥
इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन ।
हक सूरत दृढ़ कर दर्ई, देसी सबों आकीन ॥७९॥

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद ।
 पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद ॥८०॥
 हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब ।
 सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम, जाको हकें कह्या मेहेबूब ॥८१॥
 मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन माहें खिलवत ।
 उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत ॥८२॥
 महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अर्स दिल मोमिन ।
 सो अर्स दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुन ॥८३॥
 अबलीस कह्या दुनी दुस्मन, तो किया मोमिनो मता का दावा ।
 सो समझे न इसारतें, जिन ताले अबलीस हवा ॥८४॥
 जोस गिरो मोमिनो पर, हकें भेज्या जबरईल ।
 रूहें साफ रहें आठो जाम, और अबलीस दुनी दिल ॥८५॥
 अर्स से आया असराफील^१, दिया कई बिध सूर बजाए ।
 सो सोर पड़्या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए ॥८६॥
 तो अर्स कह्या दिल मोमिन, पाया अर्स खिताब ।
 इतहीं गिरो पैगंमरो, काजी कजा इत किताब ॥८७॥
 फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम ।
 खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजे खसम ॥८८॥
 जो लिख्या जिन ताले मिने, माहें हक फुरमान ।
 रूहें फरिस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान ॥८९॥
 बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अर्स हक ।
 हक अर्स में सब कह्या, दुनियां नहीं रंचक^२ ॥९०॥
 और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियां और मोमिन ।
 दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन ॥९१॥

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने ।
 ऐसे कई पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में ॥९२॥
 साँच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए ।
 हक मोमिन बिन दुनियाँ, बैठी कुफर खेल बनाए ॥९३॥
 जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन ।
 खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमिन ॥९४॥
 दुनियां दिल पर अबलीस, तो राह पुलसरात^१ कही ।
 वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई ॥९५॥
 भिस्त दर्ई तिन को, जो हुते दुस्मन ।
 सबों लई थी हुज्जत^२, हम वारसी ले मोमिन ॥९६॥
 मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त ।
 बीज^३ बुता^४ कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत^५ ॥९७॥
 मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर ।
 दोऊ गिरो दोऊ असाँ, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर ॥९८॥
 कोइ आए न सके अर्स में, जाकी नसल आदम निदान ।
 दर्ई हैयाती^६ सबन को, मेहेर कर सुभान ॥९९॥
 करें हिंदू लड़ाई मुझ से, दूजे सरीयत मुसलमान ।
 पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ो नहीं फुरकान ॥१००॥
 छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग ।
 हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग ॥१०१॥
 किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम ।
 दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम ॥१०२॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥१०२॥

१. पुल-सरात (ऊंचा रास्ता अर्थात् धर्म के मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है) ।

२. दावा । ३. अंकुर । ४. अस्तित्व । ५. भाग्य चमकाना । ६. अमृतत्व ।

खुलासा गिरो दीन का

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान ।
 हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊं पेहेचान ॥१॥
 हक सूरत हादी साहेद^१, मसहूद^२ है उमत ।
 सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत ॥२॥
 हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनो से ।
 खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में ॥३॥
 लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार ।
 तीस तीस तीनों सख्यों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार ॥४॥
 एक जाहेर किए बसरिँ, दूजे रखे मलकी पर ।
 तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर ॥५॥
 कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत^३ हक ।
 किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक ॥६॥
 राह चलाई बसरिँ फुरमानें, दर्ई कुंजी मलकी हकीकत ।
 हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत ॥७॥
 ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत ।
 मता सब^४ मेयराज^५ का, करी जाहेर गुझ खिलवत ॥८॥
 ए जो कागद वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन ।
 दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो अठारे बरन ॥९॥
 कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान ।
 ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान^६ ॥१०॥
 कह्या महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद ।
 फिरवले^६ सबन पर, महंमद के सब्द ॥११॥

इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही कयामत ।
 सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अर्स न्यामत ॥१२॥
 ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद ।
 सहर ना करे बातून, कोई न देखे छोड़ हद ॥१३॥
 ए दुनियाँ किन पैदा करी, कौन ल्याया हूद^१ तोफान ।
 किन राखी गिरो कोहतूर^२ तले, किन डुबाई सब जहान ॥१४॥
 किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह^३ तोफान ।
 किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान ॥१५॥
 तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे ।
 हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें ॥१६॥
 कह्या स्याम बाप उन लोकों का, रूम फारस आरबन ।
 सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन ॥१७॥
 कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान ।
 ना पावें महंमद गिरो को, जो सौ साल पढ़े कुरान ॥१८॥
 ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अक्वल ए आखिर ।
 बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर ॥१९॥
 एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊँ^४ ।
 सो दुनियां में या बिना, कोई नहीं कित काऊँ^५ ॥२०॥
 ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर मांहे जहूदन ।
 गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन ॥२१॥
 सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक ।
 सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिन पाए विवेक ॥२२॥
 रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हुकमें उतरे बेर तीन ।
 सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन ॥२३॥

एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर ।
 तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर ॥२४॥
 जाहेर पहचान कही रसूले, गिरो खासी और कयामत ।
 सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत ॥२५॥
 हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक ।
 लैलत कदर का टूक तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक ॥२६॥
 सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार ।
 अग्यारै सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार ॥२७॥
 रूहें गिरो तब इत आई नहीं, तो यों करी सरत ।
 कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज^१ कयामत ॥२८॥
 जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत ।
 अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत ॥२९॥
 आए वसीयत नामें मक्के से, उठ्या कुरान दुनी से बरकत ।
 सो अग्यारै सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत ॥३०॥
 झण्डा ईसे मेहेंदी ने, खड़ा किया है जित ।
 सो आई इत न्यामतें, हक हकीकत मारफत ॥३१॥
 कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान ।
 सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिन्दू या मुसलमान ॥३२॥
 जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर ।
 खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर ॥३३॥
 देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान ।
 राख लई गिरो पनाह में, डुबाए दर्ई सब जहान ॥३४॥
 रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिर्या बुतखाने^२ का ।
 तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा ॥३५॥

अब देखो माजजा रब आखिरी, सब उठाए सिजदे ठौर ।
 रोसन हुआ दिन अर्स बका, कोई ठौर रही ना सिजदे और ॥३६॥
 सिपारे ओगनतीस में, इन विध लिखे कलाम ।
 अर्स बका पर सिजदा, करावसी इमाम ॥३७॥
 और आगे बुत^१ बोले हुते, सांचा आखिरी पैगंमर ।
 फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर ॥३८॥
 अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत ।
 तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं^२ खाय लिखे सखत ॥३९॥
 मक्के मदीने दीन का, खड़ा था निसान ।
 सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान ॥४०॥
 तो जोरा किया दज्जाल ने, लोकों छुड़ाए दिया आकीन ।
 अग्यारै सदी के आखिर, रह्या न किन का दीन ॥४१॥
 गजब हुआ दुनी पर, खेंच लिया फुरमान ।
 हादी भेजे नामे वसीयत, इत रह्या न किनों ईमान ॥४२॥
 आए देव फुरमाए हक के, बीच हिंदुस्तान ।
 करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान ॥४३॥
 आया बीच हिंदुअन के, मुसाफ हक हुकम ।
 सो खलक रानी^३ गई, जिन छोड़े हक हादी कदम ॥४४॥
 फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन ।
 सो प्रगट्या अपने समें पर, हुआ हिंदुओं में रोसन ॥४५॥
 परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखण्ड ।
 कुली कालिंगा मारिया, मुक्त दर्ई ब्रह्मांड ॥४६॥
 झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन ।
 दाभा^४ जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेंहेदी मोमिन ॥४७॥

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान ।
 तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान ॥४८॥
 यों अर्स गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान ।
 किन पाई न सुध रूहें अर्स की, आप अपनी आए करी पेहेचान ॥४९॥
 एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत ।
 जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत ॥५०॥
 सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात^१ ।
 छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात ॥५१॥
 नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत ।
 तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत ॥५२॥
 बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से ।
 हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दर्ई इनने ॥५३॥
 सो जबराईल^२ जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए ।
 नूरतजल्ला^३ की तजल्ली, पर जलावत ताए ॥५४॥
 जबरूत^४ ऊपर अर्स लाहूत^५, इत महंमद पोहोंचे हजूर ।
 रद बदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर ॥५५॥
 ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती^६ क्यों समझाए ।
 मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरातें अटकाए ॥५६॥
 जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए ।
 एक महंमद कहे में पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए ॥५७॥
 दुनियां चौदे तबक में, किन सुरिया^७ उलंघी ना जाए ।
 फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए ॥५८॥
 हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन ।
 तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन ॥५९॥

१. कर्म कांड का रास्ता । २. अक्षर का जोश । ३. अक्षरातीत । ४. अक्षरधाम । ५. परमधाम । ६. मृत्युलोक ।

७. ज्योति स्वरूप और शून्य मण्डल ।

करी महंमदें मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार ।
 जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार ॥६०॥
 ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के ।
 सोई सब्द सुन पकड़्या, आगूं काफर केहेते थे जे ॥६१॥
 तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर ।
 कौल महंमद रद होत है, जो हक सों किया मजकूर ॥६२॥
 जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिले के सुकन ।
 सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन ॥६३॥
 काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नाहें ।
 केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें ॥६४॥
 कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे परत ।
 कुरान माजजा^१ मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित ॥६५॥
 तुम करत मुझसे दुस्मनी, मैं किया चाहों एक राह ।
 तो जुदे परत कई दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह ॥६६॥
 कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें ।
 लड़ फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन माहें ॥६७॥
 आए रसूलें हक जाहेर किया, किया अर्सों का बयान ।
 हौज जोए बाग कई बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान ॥६८॥
 कहावें फिरके बुजरक, हुए आप में दुस्मन ।
 महंमद मता अर्स बका, लिया जाए न हवा के जन ॥६९॥
 जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो महंमद औरों बराबर ।
 दर्ई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर ॥७०॥
 तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक ।
 हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक ॥७१॥

जाहेर राह मारे दुस्मन, अबलीस^१ दिलों पर ।
 जाहेरी इलमें नफा न ले सके, पेहेचान होए क्यों कर ॥७२॥
 बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत ।
 तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनो बका खिलवत ॥७३॥
 देसी हकीकत सब अर्सों की, नूर जमाल सूरत ।
 केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत^२ ॥७४॥
 सरत करी जो रसूले, सो पोहोंच्या आए बखत ।
 तिन इमाम को न समझे, जिन पे कुंजी कयामत ॥७५॥
 बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेंहेदी इमाम ।
 मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम ॥७६॥
 कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित होवें तब ।
 दज्जाल मार के एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब ॥७७॥
 मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी ।
 मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी ॥७८॥
 मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब ।
 फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब ॥७९॥
 तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के ।
 हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे ॥८०॥
 हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए ।
 सो अर्स मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए ॥८१॥
 मता सब मेयराज का, किया अर्स में हकें मजकूर^३ ।
 जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सो ए सब करसी जहूर ॥८२॥
 और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर ।
 होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर ॥८३॥

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, खुलें ना बिना खिताब ।
 गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब ॥८४॥
 हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए ।
 कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए ॥८५॥
 अर्स कह्या दिल मोमिन, सब अर्स में न्यामत ।
 कह्या और दिलों पर अबलीस, अब देखो तफावत ॥८६॥
 मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुर्दार चौदे तबक ।
 महंमदें मोमिनों राह ए दर्ई, ए राह क्यों ले हवाई खलक ॥८७॥
 महामत कहे ए मोमिनों, राह बका ल्योगे तुम ।
 जिन का दिल अर्स कह्या, औरों ना निकसे मुख दम ॥८८॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥१९०॥

खुलासा मेयराज का

हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अव्वल ।
 ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल ॥१॥
 कौल^१ अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब ।
 हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब ॥२॥
 तब वले कह्या अरवाहों ने, अर्स से उतरते ।
 किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए ॥३॥
 तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को ।
 याद राखियो आप में, इत मैं भी साहेद हों ॥४॥
 और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल ।
 फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल ॥५॥
 मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल ।
 बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल ॥६॥

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान ।
 वले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान ॥७॥
 उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की ।
 इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी^१ ॥८॥
 अर्स रूहें भूली नासूत में, इनसों हक हादी निसबत^२ ।
 ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजूं सोई है साइत ॥९॥
 हाए हाए ए समया क्यों न रह्या, ए कैसा भोम का बल ।
 तो कह्या सिखरा^३ सींग पर, रहे न सके एक पल ॥१०॥
 आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ ।
 फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ ॥११॥
 खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल ।
 अब सीधा क्यों ए न होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल ॥१२॥
 कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर ।
 दिया इलम लदुन्नी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर ॥१३॥
 देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर ।
 भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दर्ई अपनी आमर^४ ॥१४॥
 हुकम दिया दिल अर्स किया, हकें कह्या महंमद मासूक ।
 ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक-टूक ॥१५॥
 जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल ।
 सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अर्स में तन तुम असल ॥१६॥
 लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के ।
 हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए ॥१७॥
 लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से ।
 आई अर्स रूहें गिरो अहमदी, किए जाहेर जबराल्लें ॥१८॥

करसी बका अर्स जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद ।
 आखिर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद ॥१९॥
 हक बका का किवला^१, कह्या जाहेर होसी आखिरत ।
 पावें न माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत ॥२०॥
 हकें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर ।
 सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर ॥२१॥
 कहे कुरान इन जिमी से, तरफ न पाई अर्स हक ।
 ए तेहेकीक किन ना किया, कई ढूँढ थके बुजरक ॥२२॥
 जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर ।
 बेर तीसरी लैलत कदर में, जिन रोज कयामत करी फजर ॥२३॥
 सोई गिरो इसलाम की, खेल लैल देख्या दो बेर ।
 तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर ॥२४॥
 सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम ।
 और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम ॥२५॥
 ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे ।
 मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के ॥२६॥
 कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत^२ के ।
 कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे ॥२७॥
 लैलत कदर में रूहें फरिस्ते, जो अर्स से उतरे ।
 कौल किया हकें जिन सों, सो नूर बानी से समझेंगे ॥२८॥
 फना जिमी के बीच में, जाहेरी पहाड़ पूजत ।
 दुनियां नजर फना मिने, अर्स बका न काहं सूझत ॥२९॥
 दिल हकीकी अर्स मोमिन, कह्या तिन दिल की भी तरफ नाहें ।
 वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रहेत अर्स तन माहें ॥३०॥

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद^१ सूरत ।
 खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत ॥३१॥
 ए जो फजर सूर असराफील, नुकता^२ हुकम बजावत ।
 ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत ॥३२॥
 और कुफर दुनी जो पहाड़ सी, सूर दूजे कायम करत ।
 हकें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत ॥३३॥
 फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन ।
 दर्ई लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन ॥३४॥
 दिल मोमिन अर्स कह्या, ए जो असल अर्स में तन ।
 ए लिख्या फुरमान में जाहेर, पर किया न बेवरा किन ॥३५॥
 औलिया लिल्ला रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत ।
 ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अर्स रूहें हक निसबत ॥३६॥
 हकें कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनों पर ।
 सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमिन न कोई कादर ॥३७॥
 हकें लिख्या मैं करूँ हिदायत, एक नाजी फिरके को ।
 हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजख मों ॥३८॥
 लिख्यां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम ।
 सो सब आमर^३ दर्ई हाथ रूहन, इनों दिल अर्स कर बैठे खसम ॥३९॥
 और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कह्या इन ।
 दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कह्या दुस्मन ॥४०॥
 दुनियां दिल मजाजी अवलीस, दिल हकीकी पर हक ।
 एक गिरो दिल अर्स कही, सोई अर्स रूहें बुजरक ॥४१॥
 रूह की नजरों पाइए, जो हक के नजीकी ।
 सो बैठे अपने मरातबे^४, देवे हक कलाम साहेदी ॥४२॥

बड़ा फरिस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित ।
 सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत ॥४३॥
 मलकूत^१ जबरूत^२ लाहूत^३, ए अर्स कर तीनों लिखे ।
 मलकूत फना बीच में, जबरूत लाहूत बका ए ॥४४॥
 नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित ।
 अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत ॥४५॥
 आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत ।
 पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत ॥४६॥
 हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अर्स वाहेदत ।
 करे इलम लदुन्नी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत ॥४७॥
 वाहेदत निसबत अर्स की, जब जाहेर हुई खिलवत ।
 ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अर्स लज्जत ॥४८॥
 ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत ।
 वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अर्स अजीम उमत ॥४९॥
 बीच मेयराज इसारतें, मासूक लिख भेजत ।
 हाँसी करने रूहन पर, ए जो फरेब^४ देखाया इत ॥५०॥
 हक अर्स नजीक सेहेरग^५ से, दोऊ हादी खोले द्वार ।
 बैठाए अर्स अजीम में, जो कह्या मेयराजें नूर पार ॥५१॥
 किन तरफ न पाई अर्स हक की, माहें चौदे तबक ।
 सो खोल दिए पट हादिँ, इलम ईसे के बेसक ॥५२॥
 देखो मरातबा मोमिनो, बोलें न मेयराज बिन ।
 जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अर्स रूहन ॥५३॥
 मेयराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन ।
 कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर^६ या बिन ॥५४॥

कई जोर किया जबरईलें, आया एक कदम महंमद खातिर ।
 तो भी आगूँ आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर ॥५५॥
 चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमिन ।
 जो रूहें उतरी लैलत कदर में, सो चढ़ जाएंगे अर्स वतन ॥५६॥
 इसारतें मेयराज में, जो लिख भेजियां हक ।
 सो खोलें हम इसारतें, पढ़ायल रूह अल्ला के बेसक ॥५७॥
 कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर ।
 तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर ॥५८॥
 अन्दर मुर्ग जो कह्या, बैठा हुकम के दरखत ।
 इत ना पोहोच्या जबरईल, सो मोमिन खोले मारफत ॥५९॥
 चुटकी खाक ले चोंच में, मुर्ग बैठा दरखत पर ।
 पर ना जलें इन मुर्ग के, सो कोई देवे एह खबर ॥६०॥
 हादीएँ पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में ।
 खेल उमतेँ मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे ॥६१॥
 लिख्या दरिया^१ नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी ।
 मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दर्ई महंमदें मेयराज में साहेदी ॥६२॥
 ए जो मुर्ग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था ।
 जो छोड़ूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा ॥६३॥
 दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री ।
 ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी ॥६४॥
 कह्या खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर ।
 दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर ॥६५॥
 हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा^२ क्यों ए ना होए ।
 करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए ॥६६॥

नूर तजल्ला बीच में, हक हादी रूहों खिलवत ।
 हक से हादी रूहें नूर में, ए अर्स असल वाहेदत ॥६७॥
 नूर तजल्ला बीच में, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन ।
 जित आए न सक्या जबरईल, इत असल मोमिनो तन ॥६८॥
 लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हाँसी करत ।
 हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हाँसी इन खिलवत ॥६९॥
 मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहे फुरमान ।
 इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान ॥७०॥
 सो कुलफ कह्या फरामोस^१ का, कह्या गुनाह रूहों का दिल ।
 खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल ॥७१॥
 फरामोस गुनाह दिल मोमिनो, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल ।
 याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल ॥७२॥
 कहे महंमद सुनो मोमिनो, ए उमी^२ मेरे यार ।
 छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार ॥७३॥
 हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन ।
 यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन ॥७४॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥२६४॥

खुलासा इसलाम का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन ।
 झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन ॥१॥
 मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन ।
 ए खुलासा बिन^३ इसलाम का, सबों देखावे बका वतन ॥२॥
 बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए ।
 हादी रूहें अर्स से इजने^४, लैलत कदर में उतरे ॥३॥

हकें कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू बले कह्या रूहन ।
 खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन ॥४॥
 भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते ।
 मैं तुम में साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के ॥५॥
 चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार ।
 इन तसबी^१ से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार ॥६॥
 रूहें रहें दरगाह बीच में, प्यारी परवरदिगार ।
 खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहें सुमार ॥७॥
 उमत मेला महंमद का, इनकी काहूँ ना पेहेचान ।
 ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान ॥८॥
 ए बात नहीं अटकल की, होए साबित खुलें हकीकत ।
 बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत ॥९॥
 इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें ।
 सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए ॥१०॥
 मासूक महंमद तो कह्या, बहस^२ हुआ वास्ते इस्क ।
 और कलाम अल्ला में कह्या, आसिक नाम है हक ॥११॥
 मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें ।
 ए जाने हक हादी रूहें, अर्स बका के माहें ॥१२॥
 सुंनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत ।
 महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत ॥१३॥
 सक सुभे सब सरीयतों, यों कहे हदीस फुरमान ।
 कोई जाने ना हक तरफ को, ए अर्स रूहें पेहेचान ॥१४॥
 दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए ।
 आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए ॥१५॥

जो देख न सक्या जबरईल, तो क्यों कहूं औरन ।
 ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन ॥१६॥
 ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन ।
 रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन ॥१७॥
 इनों तन असल अर्स में, तीन बेर उतरे मांहे लैल ।
 ए जाहेर लिख्या फुरमान में, ए हकें देखाया खेल ॥१८॥
 रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेंहेदी देखावन ।
 तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवे वतन ॥१९॥
 रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दर्ई सबन ।
 द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन ॥२०॥
 रूहें उतरी नूर बिलंद से, खलक पैदा जुलमत ।
 दुनी दिल अबलीस कह्या, दिल मोमिन हक वाहेदत ॥२१॥
 दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल ।
 हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल ॥२२॥
 तीन जिनस पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन ।
 करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन ॥२३॥
 ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम ।
 ए मेहेर मुतलक^१ हक से, करत जाहेर अल्ला कलाम ॥२४॥
 बिने^२ सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान ।
 दीजे साहेदी मुसाफ की, ज्यों होए ना सके मुनकर^३ जहान ॥२५॥
 जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल ।
 हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल ॥२६॥
 पांच बिने कही मुस्लिम की, जिन लई सरीयत ।
 कलमा निमाज रोजा कह्या, और जगात हज जारत^४ ॥२७॥

जुबांन से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज ।
 जगात^१ हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज इलाज ॥२८॥
 परहेज करे बदफैल से, बिने पांचों से पाक होए ।
 सो आग न जले दोजख की, पावे भिस्त तीसरी सोए ॥२९॥
 कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान^२ लग आखिर ।
 पर अर्स बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर ॥३०॥
 जो पांच बिने न करे, सो नहीं मुसलमान ।
 इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें फुरमान ॥३१॥
 एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबुवत^३ ।
 एक दीन जब होएसी, कह्या तब होसी साबित ॥३२॥
 हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात ।
 सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना पुलसरात ॥३३॥
 कहे महंमद मिस्कात में, दुनी दिल पर सैतान ।
 वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान ॥३४॥
 पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत ।
 करसी लड़ाई आप में, छूटे न लग कयामत ॥३५॥
 तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक ।
 और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक ॥३६॥
 करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या माहें फुरमान ।
 इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान ॥३७॥
 सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत ।
 ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत ॥३८॥
 छोड़ सरा^४ ले तरीकत^५, पीठ देवे नासूत^६ ।
 फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत^७ ॥३९॥

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिल सों रोजे रमजान ।
 दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान ॥४०॥
 कह्या दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन ।
 सो छोड़ ना सके मलकूत को, आड़ी जुलमत हवा ला सुंन ॥४१॥
 दुनियां दिल कह्या मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का ।
 अबलीस कह्या दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह ॥४२॥
 आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए ।
 कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए ॥४३॥
 जबरईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड़ न सक्या असल ।
 तो दुनियां जो तिलसम^१ की, सो क्यों सके आगे चल ॥४४॥
 जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत ।
 सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत ॥४५॥
 जो उतरे मलायक लैल में, ताको असल नूर मकान ।
 सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान ॥४६॥
 कलमा^२ निमाज^३ रोजा^४ हकीकी, करे दिल सों रूह पेहेचान ।
 हुआ बंदा बूझ जगात में, दिल दीदार नूर सुभान ॥४७॥
 मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर ।
 बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर ॥४८॥
 जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोड़े हवा मलकूत ।
 दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत ॥४९॥
 जो फरिस्ता जबरूत का, सो रहे ना सके मलकूत ।
 मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत ॥५०॥
 बड़ा फरिस्ता नजीकी, जाको रूहल अमीन^५ नाम ।
 जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम ॥५१॥

पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबरईल सबन ।
 सो जबरईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमिन ॥५२॥
 सो जबरईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्यों ए कर ।
 हिमायत लई महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर ॥५३॥
 तन मोमिन असल अर्स में, जो अर्स अजीम बका हक ।
 जित पोहोंच्या नहीं जबरईल, तित क्या कहूं औरों खलक ॥५४॥
 हक हादी रूहें लाहूत में, ए महंमद रूहों वतन ।
 इस्क हकीकत मारफत, तो हक अर्स दिल मोमिन ॥५५॥
 मारफत हक हकीकत, अर्स रूहों को दर्ई हक ।
 जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक ॥५६॥
 कही रूहें नूर बिलंद से, मांहें उतरी लैलत कदर ।
 कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातिर ॥५७॥
 ए राह इसलाम मोमिनों, चढ़ उतर देखाई रसूल ।
 आई तीन सूरतें इन वास्ते, जाने रूहें जावें जिन भूल ॥५८॥
 इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अर्स कुंजी हाथ दे ।
 दे खिताब इमाम को, अर्स पट खोले इन वास्ते ॥५९॥
 असराफील जबरईल, भेज दिया आमर^१ ।
 निगहबानी^२ कीजियो, मेरे खासे बंदों पर ॥६०॥
 इलम लदुन्नी भेजिया, सब करने बका पेहेचान ।
 आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान ॥६१॥
 हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए^३ तले ।
 कोई और न बूझे इनको, मेरी वाहेदत के हैं ए ॥६२॥
 मेरी कदीम^४ दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन ।
 ए इलम लदुन्नी से माएने, करे हादी बीच रूहन ॥६३॥

अर्स दिल इनका कह्या, और कह्या हकीकी दिल ।
 एती बड़ाई इनको दर्ई, जो वाहेदत इनों असल ॥६४॥
 ए अर्स बड़ा रूहों का, जो कह्या तजल्ला नूर ।
 जबरईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर ॥६५॥
 हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए ।
 सो वास्ते रूहों दाखले^१, अब हादी देत मिलाए ॥६६॥
 कही पाँच बिन^२ मुस्लिम की, सोई पाँच बिन मोमिन ।
 वे करें बीच फना के, ए पाँच बका बातन ॥६७॥
 अर्स रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिन सब इस्क ।
 हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान^३ मेहेर हक ॥६८॥
 चौदे तबक की जहान में, किन तरफ न पाई अर्स हक ।
 सो किया अर्स दिल मोमिनो, ए निसबत मेहेर मुतलक ॥६९॥
 हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर ।
 ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर ॥७०॥
 मोमिन आए इत थें ख्वाब में, अर्स में इनों असल ।
 हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत मांहें नकल ॥७१॥
 जो मोमिन बिन पाँच अर्स में, सो होत बंदगी बातन ।
 जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन ॥७२॥
 दिल अर्स हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन ।
 रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन ॥७३॥
 महामत कहे ए मोमिनो, हकें मेहेर करी तुम पर ।
 भुलाए तुमें हाँसीय को, वास्ते इस्क खातिर ॥७४॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥३३८॥

भिस्त सिफायत का बेवरा

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत ।
 दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत ॥१॥
 हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए ।
 अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए ॥२॥
 कहूँ नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दर्ई पेहेचान ।
 रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूँ ले माएने फुरमान ॥३॥
 ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत ।
 पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत ॥४॥
 जो लग्या वजूद को, ताए छूटे न जिमी नासूत ।
 पुलसरात^१ को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत ॥५॥
 ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन ।
 सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन ॥६॥
 जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन ।
 सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत बिन ॥७॥
 जो होवे अर्स अजीम की, सो ले हकीकत मारफत ।
 इनको इस्क मुतलक, जिन रूह हक निसबत ॥८॥
 रूहें फरिस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान ।
 एक इस्क दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान ॥९॥
 उतरी रूहें फरिस्ते लैल में, अपने रब के इजन^२ ।
 दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन ॥१०॥
 भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखिर ।
 ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर ॥११॥

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त ।
 दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित ॥१२॥
 आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार ।
 जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार ॥१३॥
 भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई ।
 भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही ॥१४॥
 पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम ।
 चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम ॥१५॥
 जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत ।
 भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत ॥१६॥
 जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले ।
 सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए ॥१७॥
 रूहों अक्स^१ कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन ।
 सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन ॥१८॥
 जोलों अपनी राह पावें नहीं, तोलों पोहोंचे ना अपने मकान ।
 हादी हद्दों हिदायत करके, आखिर पोहोंचावें निदान ॥१९॥
 अब कहूं सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे ।
 नेक सुनो सो बेवरा, देऊं रूहों को बताए ॥२०॥
 जित पोहोंची सिफायत^२ महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे ।
 सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे ॥२१॥
 जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत ।
 सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत ॥२२॥
 जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें ।
 महंमद सिफायत लई मोमिनों, जाकी रूह बका अर्स माहें ॥२३॥

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर ।
 हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर ॥२४॥
 दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए ।
 फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए ॥२५॥
 सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत ।
 छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत ॥२६॥
 चौदे तबक नबी के नूर से, सो सब कहें हम मोमिन ।
 सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अर्स रोसन ॥२७॥
 सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम ।
 ले हकीकत पोहोंचे अर्स में, जिन सिर लिया महंमद हुकम ॥२८॥
 पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक^१ ।
 कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक ॥२९॥
 हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक ।
 जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे^२ लीक^३ ले लीक ॥३०॥
 तरक^४ करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन ।
 वजूद को भी मह^५ करे, ए महंमद सिफायत मोमिन ॥३१॥
 कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई ।
 धरे आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी^६ में रोसनार्ई ॥३२॥
 महंमद एही सिफायत, अर्स बका हक रोसन ।
 जो अर्स अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमिन ॥३३॥
 जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात ।
 देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात ॥३४॥
 किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते ।
 जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए ॥३५॥

१. बेशक । २. लडना झगडना । ३. पुराने रुढिवादी ज्ञान को पकड़े रहना । ४. त्यागना । ५. बलिदान करना । ६. मस्तक - माथा ।

इलम खुदाई लदुन्नी, सब अर्सों की सुध तिन ।
 एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन ॥३६॥
 अर्स रूहें सब बिध जानहीं, हौज जोए^१ जिमी जानवर ।
 महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर ॥३७॥
 जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली ।
 अर्स आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली ॥३८॥
 क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए ।
 किन विध टापू बीच में, ए सब सुध मोमिन देवें बताए ॥३९॥
 जोए अर्स के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्स के ।
 नूर अर्स की गलियां, अरस अरवा जानें ए ॥४०॥
 बारीक गलियां अर्स की, मोमिन भूलें न इत ।
 अरवा अर्स की रात दिन, याही में खेलत ॥४१॥
 जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान ।
 जोए हौज अर्स जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान ॥४२॥
 नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर ।
 महंमद सिफायत जिनको, तिन से छिपी रहे क्यों कर ॥४३॥
 महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर ।
 सो देखो अर्स अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद^२ का जहूर ॥४४॥
 हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन ।
 ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन ॥४५॥
 मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात ।
 तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात ॥४६॥
 एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर ।
 कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर ॥४७॥

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए ।
 इत वाहेदत में दूसरा, कबहूँ न कहिए कोए ॥४८॥
 महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार ।
 हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार ॥४९॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥३८७॥

इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद ।
 मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द ॥१॥
 एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन ।
 तिनको सारों ढूंढिया, सो एक न पाया किन ॥२॥
 एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर ।
 सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर ॥३॥
 सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक ।
 सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक ॥४॥
 सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत ।
 ढूंढ ढूंढ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित ॥५॥
 ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर ।
 ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और ॥६॥
 नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन ।
 लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन ॥७॥
 आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब^१ ।
 किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब ॥८॥
 यों गोते खाए बीच फना^२ के, ला^३ सुन्य ना उलंघी किन ।
 ढूंढ ढूंढ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन ॥९॥

लदुन्नी से पाइए, जो है इलम खुदाए ।
खोज खोज सबे हारे, आज लों इप्तदाए^१ ॥१०॥
लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर ।
एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद^२ जहूर ॥११॥
लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक^३ ।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक ॥१२॥
एक खुदा हक महंमद, अर्स बका हौज जोए ।
उतरी अरवाहें अर्स की, चीन्हो गिरो नाजी सोए ॥१३॥
सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए ।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के ॥१४॥
कहे फुरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर ।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर ॥१५॥
फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर ।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर ॥१६॥
महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम ।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम ॥१७॥
जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखिर ।
और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहत्तर ॥१८॥
दुनियां चौदे तबक में, सोई नाजी गिरो है एक ।
आखिर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक ॥१९॥
महामत कहे ए मोमिनो, ल्यो हकीकत कुरान ।
ढूंढो फिरके नाजी^४ को, जो है साहेब ईमान ॥२०॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥४०७॥

हक की सूरत

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत ।
 हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दर्ई महंमद बका न्यामत ॥१॥
 आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर ।
 तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर ॥२॥
 खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक ।
 खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक ॥३॥
 दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार ।
 तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार ॥४॥
 पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत ।
 बोहोत करी रद-बदलें^१, वास्ते सब उमत ॥५॥
 अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर ।
 और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर ॥६॥
 बोहोत देखी बका न्यामते^२, करी हक सों बड़ी मजकूर ।
 ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर ॥७॥
 कौल^३ किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत ।
 हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत ॥८॥
 वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान ।
 सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान ॥९॥
 जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक ।
 जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखिर दोजक ॥१०॥
 खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार ।
 ले पुरसिस^४ लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार ॥११॥

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक ।
 तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक ॥१२॥
 जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे ।
 ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से ॥१३॥
 कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हक सों होए न बात ।
 तुम जाओ महंमद पे, वे करसी सबों सिफात^१ ॥१४॥
 ए बात पसरी दुनी में, जो कोई ल्याया आकीन ।
 सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन ॥१५॥
 खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनियां महंमद के नूर ।
 इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर ॥१६॥
 कोईक पूरा ईमान ल्याइया, बिन ईमान रहे बोहोतक ।
 कई जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक^२ ॥१७॥
 केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर^३ ।
 एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर ॥१८॥
 कह्या फिरके नाजीय को, होसी हक की हिदायत ।
 सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखिरत ॥१९॥
 तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत ।
 ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेंहेदी करसी साबित ॥२०॥
 कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद^४ हक ।
 तिनको न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक ॥२१॥
 जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावे सक ।
 तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक ॥२२॥
 हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार ।
 जो जहूदों ने पकड़्या, इनों सोई किया करार ॥२३॥

जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद ।
 खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद ॥२४॥
 गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान ।
 कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान ॥२५॥
 खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर ।
 हक सूरत की दर्ई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर ॥२६॥
 दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान ।
 एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक^१ महंमद जान ॥२७॥
 महामत कहे सुनो मोमिनो, दीन हकीकी हक हजूर ।
 हक अमरद^२ सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर ॥२८॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥४३५॥

रूहों की बिने देखियो

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल ।
 बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल^३ ॥१॥
 कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन ।
 कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन ॥२॥
 तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर ।
 ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर ॥३॥
 कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे मांग्या खेल ए ।
 सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे ॥४॥
 दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक ।
 तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक ॥५॥
 खोज खोज के सब थके, कई कहावें फिरके बुजरक ।
 पर तिन सारों ने यों कह्या, गई न हमारी सक ॥६॥

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत ।
 सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित ॥७॥
 हम रूहें भी आइयाँ इन खेल में, सो गैयां माहें भूल ।
 सुध ना बिरानी आपनी, भया ऐसा हमारा सूल ॥८॥
 इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप ।
 फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप ॥९॥
 फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत ।
 ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत ॥१०॥
 कुंजी ल्याए रूहअल्ला, जासों पावें सब फल ।
 ज्याँ कर ताला खोलिए, सो जाने न कोई कल ॥११॥
 सो कुंजी^१ साहेब ने, मेरे हाथ दर्ई ।
 जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही ॥१२॥
 सक परदा कोई न रह्या, सब विध दर्ई समझाए ।
 कहे खोल दे अर्स रूहों को, ए मिलसी तुझे आए ॥१३॥
 अब देखो दिल विचार के, कैसी बुजरक बात है तुम ।
 कैसा खेल तुम देखिया, कई विध देखाई हुकम ॥१४॥
 चीन्हो इन खसम को, चीन्हो बका वतन ।
 और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल^२ करत विध किन ॥१५॥
 फुरमान भेज्या किन ने, ल्याए ऊपर किन ।
 कौन लेके आइया, माहें क्या खजाना धन ॥१६॥
 कौन ल्याया कुंजीय को, है कुंजी में क्या विचार ।
 किन ने ताला खोलिया, खोल्या कौन सा द्वार ॥१७॥
 क्या है इन दरबार में, दर्ई कहां की सुध ।
 सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आतम बुध ॥१८॥

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजी किन ।
 कुंजी कुलफ^१ गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन ॥१९॥
 एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल ।
 जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल ॥२०॥
 फरामोसी तुमें किन दर्ई, अब तुमको कौन जगाए ।
 इन बातों नींद क्यों रहें, जो होवे अर्स अरवाए ॥२१॥
 मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत^२ ।
 ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत ॥२२॥
 महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम ।
 कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम ॥२३॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥४५८॥

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए ।
 हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे ॥१॥
 ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए ।
 सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए ॥२॥
 खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत ।
 इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत ॥३॥
 बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान ।
 नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान ॥४॥
 तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास ।
 ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल^३ के पास ॥५॥
 ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए ।
 ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के ॥६॥

इनमें कोई कायम^१ करें, जो दिल आए चढ़त ।
 सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत ॥७॥
 कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द माहें ।
 तो रोसनी नूरमकान^२ की, क्यों आवे इन जुबांए ॥८॥
 जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल ।
 तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल ॥९॥
 ए बल नूर-जलाल^३ को, जिन की एह कुदरत ।
 एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत ॥१०॥
 सो नूर^४ नूरजमाल^५ के, दायम^६ आवें दीदार ।
 ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार ॥११॥
 नूर-जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत ।
 तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित ॥१२॥
 जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल ।
 तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल ॥१३॥
 जित चल न सके जबरईल, कहे मेरे पर जलत ।
 नूरतजल्ला की तजल्ली^७, ए जोत सेहे न सकत ॥१४॥
 जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत ।
 तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत ॥१५॥
 ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक ।
 नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक ॥१६॥
 ए जो सब कहियत है, हक बिना कछु ए बात ।
 सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात ॥१७॥
 पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कह्या एक ।
 खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक ॥१८॥

आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह ।
 खूबी सोभा सब इनकी, प्यारा प्रेम सनेह ॥१९॥
 मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन ।
 हक बंदगी सिवाए जो कछू कह्या, सो सब तले इजन^१ ॥२०॥
 अब कहूं इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम ।
 तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम ॥२१॥
 इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर ।
 फिराक^२ न आवत हमको, याद कर ऐसा घर ॥२२॥
 आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन ।
 अजहूँ न विरहा आवत, सुन के एह वचन ॥२३॥
 ऐसा कदीमी^३ वतन, ऐसा इस्क आराम ।
 ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम ॥२४॥
 ऐसा हक जो कादर^४, सब विध काम पूरन ।
 ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमिन ॥२५॥
 ए जो सुकन हक के मैं कहे, तामें जरा न रही सक ।
 ए सुन के विरहा न आवत, सो ना इन घर माफक ॥२६॥
 यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पिउ ।
 करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ ॥२७॥
 फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत ।
 जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत ॥२८॥
 खूबी खुसाली बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान ।
 इस्क प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान ॥२९॥
 कहूं प्यार कर मोमिनों, दिल दे सुनियो तुम ।
 अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम ॥३०॥

कुदरत से पाइयत हैं, बुजरकी कादर ।
 सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूँ नजर ॥३१॥
 तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अर्स ।
 कह्या तुम भी उतरे अर्स से, यों दर्ई सोभा अरस-परस ॥३२॥
 ए खावंद काहूँ न पाइया, खोज खोज थके सब मिल ।
 चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम^१ अकल ॥३३॥
 सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे ।
 चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए ॥३४॥
 हाँसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक ।
 चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक ॥३५॥
 महामत कहे हँसे हक, देख मोमिनोँ हाल ।
 आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल ॥३६॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥४९४॥

जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए ।
 कहूँ माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए ॥१॥
 अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूँढ्या बनी आदम ।
 एती सुध किन न परी, कहाँ खुदा कौन हम ॥२॥
 कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम ।
 सुध न खसम रसूल की, नहीं गिरो की गम ॥३॥
 कौन रूहें कौन फरिस्ते, कौन आदम कौन जिन^२ ।
 पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन ॥४॥
 अपनी अपनी खोजिया, पर आया नहीं खुदाए ।
 थके सब नासूत में, पोहोंचे नहीं इप्तदाए ॥५॥

आब हैयाती न पाइया, दौड़या सिकंदर ।
 काहूँ न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर ॥६॥
 आप राह अपनी मिने, दूँढ्या सब फिरकन ।
 कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन ॥७॥
 कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल ।
 छोड़ सुरिया^१ सितारा, कोई आगूं न सके चल ॥८॥
 जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम ।
 खुद खबर पाई नहीं, ताथें पड़े सब भरम ॥९॥
 लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान ।
 और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान ॥१०॥
 माएनें ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार ।
 फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार ॥११॥
 कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम ।
 सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम ॥१२॥
 क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर ।
 कहे सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर ॥१३॥
 क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर ।
 ए सुध किनको न परी, कौन किताबें क्यों कर ॥१४॥
 मनसूख^२ करी सब किताबें, रानी^३ सबों की उमत ।
 ए सुध किन को न परी, जो इनकी क्यों करी सिफत ॥१५॥
 कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखिर ।
 कहां से उतरे रूहें मोमिन, कहां से आए काफर ॥१६॥
 काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार ।
 क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार ॥१७॥

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर ।
 क्यों कर पहाड़ उड़सी, तब कौन नजीक कौन दूर ॥१८॥
 पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर ।
 सब दुनियां को खाएसी, आजूज^१ माजूज^२ क्यों कर ॥१९॥
 कह्या गधा बड़ा दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान ।
 पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान^३ ॥२०॥
 ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभतूलअर्ज ।
 ए सुध काहूं न परी, क्यों मगरब^४ सूरज ॥२१॥
 ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत ।
 माएने मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत ॥२२॥
 मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक ।
 पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक ॥२३॥
 जब मोहे हादी सुध दर्ई, ए खुले माएने तब ।
 तले ला मकान के, खुराक मौत की सब ॥२४॥
 कहे दुनियां ला मकान को, बेचून^५ बेचगून^६ ।
 खुदा याही को बूझहीं, बेसबी^७ बेनिमून^८ ॥२५॥
 याही को माया कहें, पैदास सब इन से ।
 कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने ॥२६॥
 खुदा याही को कहें, याही को कहें काल ।
 आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल ॥२७॥
 यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन ।
 यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन ॥२८॥
 दुनियां ला^९ इलाह^{१०} की, फेर फेर करे फिकर ।
 गोते खाए फना मिने, पोहोंचे न बका नजर ॥२९॥

ला याही को केहेवहीं, इला भी याही को ।
 सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मों ॥३०॥
 दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर ।
 सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर ॥३१॥
 मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात ।
 जो मेहेर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात ॥३२॥
 जब मोहे हादी सुध दर्ई, पाया ला इला तब ।
 नूर-मकान नूर-तजल्ला, पाई अर्स हकीकत सब ॥३३॥
 जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान ।
 मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरो अपनी जान ॥३४॥
 नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब ।
 तोबा^१ दरवाजे बन्द होएसी, कहा करसी ईमान तब ॥३५॥
 ईमान ल्याओ सो ल्याइओ, मैं केहेती हों बीतक ।
 पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कह्या मोहे हक ॥३६॥
 रूह अल्ला अर्स अजीम से, मो सों आए कियो मिलाप ।
 कहे तुम आए अर्स से, मोहे भेजी बुलावन आप ॥३७॥
 तुम आए खेल देखन को, सो किया कारन तुम ।
 ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम ॥३८॥
 तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब ।
 हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब ॥३९॥
 इलम लदुन्नी देय के, खोल दर्ई हकीकत ।
 सदर-तुल-मुंतहा^२ अर्स-अजीम^३, कही कायम की मारफत ॥४०॥
 दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार ।
 ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार ॥४१॥

दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे ।
 चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे ॥४२॥
 सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब ।
 कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब^१ ॥४३॥
 इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया ।
 तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कह्या ॥४४॥
 नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया ।
 सेहेरग से नजीक, अर्स बका में लिया ॥४५॥
 साहेदी खुदाए की, रूह अल्ला दर्ई जब ।
 खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब ॥४६॥
 अन्दर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार ।
 ल्याए किल्ली अर्स अजीम से, ले बैठाए नूर के पार ॥४७॥
 हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन ।
 रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन ॥४८॥
 ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी^२ देत ।
 बैठ बीच ब्रह्मांड के, अर्स बका में लेत ॥४९॥
 अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए ।
 कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए ॥५०॥
 जो रूहें अर्स अजीम की, कहूं तिनको मेरी बीतक ।
 जो हुई इनायत^३ मुझ पर, जिन बिध पाया हक ॥५१॥
 कायम फना बीच दुनी के, हुती न तफावत^४ ।
 मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत ॥५२॥
 नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध ।
 जबरूत लाहूत हाहूत^५, दर्ई हादी हिरदे बुध ॥५३॥

ए सुध पाए पीछे, हुआ बेवरा बुजरक ।
 ज्यों जाहेर मांहे दुनियां, त्यों बातून मांहे हक ॥५४॥
 बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी ।
 नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती ॥५५॥
 नासूत बीच फना के, अर्स कायम हमेसगी ।
 दुनियां ताल्लुक दिल की, रूह मोमिन खुदाए की ॥५६॥
 एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने ।
 नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़ें न हठ अपने ॥५७॥
 इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर ।
 फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर ॥५८॥
 जाहेर मैं केता कहूं, खुदाए का जहूर ।
 वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर ॥५९॥
 ऊपर ला मकान के, राह न मौत की तित ।
 नूर-मकान नूर-तजल्ला, अर्स हमेसगी जित ॥६०॥
 नूर-तजल्ला अर्स में, सूरत साहेब की ।
 दरगाह बीच रहेत हैं, रूहें हमेसगी ॥६१॥
 बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान ।
 रहें हजूर हक के, ए निसबत^१ करी पेहेचान ॥६२॥
 तब मैं दिल में यों लिया, करों कायम चौदे तबक ।
 मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक ॥६३॥
 ऐसा जब दिल में आइया, दिया जोस हकें बल ।
 उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल ॥६४॥
 ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप ।
 रूह अल्ला पेहेले दिल मिने, अहमद^२ कियो मिलाप ॥६५॥

तब खुदाई इलम से, भई सबे पेहेचान ।
 ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान ॥६६॥
 सो कुरान में देखिया, सब पाइयां इसारत ।
 हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत ॥६७॥
 जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत ।
 ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत ॥६८॥
 एह कायम न्यामते^१, दोऊ से जुदी जुदी ।
 नूर-जमाल और नूर की, दर्ई दोऊ की साहेदी ॥६९॥
 महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई ।
 कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई ॥७०॥
 ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक ।
 बरकत खास उमत की, सब लेसी इस्क ॥७१॥
 करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम ।
 साफ दिल सब होएसी, जिनको पोहोंच्या दम ॥७२॥
 कहे सब्द सब आगूं ही, इत खुदा करसी कजाए ।
 हिसाब सबन का लेयके, भिस्त जो देसी ताए ॥७३॥
 रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, मेंहेदी इमामत^२ ।
 दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत ॥७४॥
 जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर ।
 आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर ॥७५॥
 एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम ।
 लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम ॥७६॥
 जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए ।
 इत काम बीच खुदाए के, काहूँ दम ना मार्यो जाए ॥७७॥

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए ।
 खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए ॥७८॥
 अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर ।
 हुकम ऐसा कर छोड़्या, काहूं करनी न पड़े फिकर ॥७९॥
 महामत कहे सुनो मोमिनो, मौला^१ अति बुजरक ।
 मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक ॥८०॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥५७४॥

दोनामा^२ किताब-मंगला चरण

अब कहूं विध निगम^३, देऊँ महंमद की गम ।
 जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम ॥१॥
 कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक ।
 छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख ॥२॥
 खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब ।
 पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद ॥३॥
 सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ ।
 बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ ॥४॥
 हक नाहीं मिने सृष्ट सुपन, ढूंढ्या ला के लोकन ।
 जो जुलमत^४ से उतपन, दर्ई साख आप मुख तिन ॥५॥
 कई खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम ।
 ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम ॥६॥
 कैयों ढूंढ्या चौदे भवन, ढूंढे चार मुक्त के जन ।
 नवधा^५ के ढूंढे भिन भिन, न कछु खबर त्रैगुन ॥७॥
 महाप्रले होसी जब, सरगुन न निरगुन तब ।
 निराकार न सुन, केहेवे को नाहीं वचन ॥८॥

नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया ।
 जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया ॥९॥
 ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार ।
 ढूँढ्या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार ॥१०॥
 कई अवतार किताबाँ कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थकर ।
 औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नहीं काहूँ खबर ॥११॥
 कह्या इतथें आगे सुन, निराकार निरगुन ।
 भी कह्या निरंजन, तार्थें अगम रह्या सबन ॥१२॥
 कैयों ढूँढ्या होए दरवेस^१, फिरे जो देस विदेस ।
 पर पाया ना काहूँ भेस, आगुं ला मकान कह्या नेस^२ ॥१३॥
 मंगला चरन तमाम

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥५८७॥

साखी-दौड़ करी सिकंदरे, ढूँढ्या हैयाती आब^३ ।
 बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब ॥१॥
 हारे ढूँढ ऊपर तले, खुदा न पाया किन ।
 तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुन ॥२॥
 और नाम धर्या हक का, बेचून बेचगून ।
 कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ॥३॥
 इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत ।
 देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत ॥४॥
 मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत ।
 कौल किया हकें मुझ सों, मैं ल्याया हक मारफत ॥५॥
 उतरी अरवाहें अर्स से, रुहें बारे हजार ।
 और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार ॥६॥

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान ।
 जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे हक पेहेचान ॥७॥
 सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत ।
 तिन पर हैं कई फरिस्ते, तिन पर है मलकूत ॥८॥
 ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान ।
 नूर पार नूर तजल्ला^१, मैं तहां से ल्याया फुरमान ॥९॥
 जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर ।
 मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर ॥१०॥
 कह्या सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार ।
 कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार ॥११॥
 बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए ।
 बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए ॥१२॥
 कौल किया हकें मुझ से, हम आवेंगे आखिर ।
 ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर ॥१३॥
 होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार ।
 भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार ॥१४॥
 ईसा मेंहेदी जबराईल, और असराफील इमाम ।
 मार दज्जाल एक दीन करसी, खोलसी अल्लाकलाम^२ ॥१५॥
 सो ए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान ।
 महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान ॥१६॥
 तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अबलीस दिलों जिन ।
 कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुन ॥१७॥
 सोई कौल सरीयत ने, पकड़ लिया इनों से ।
 कौल तोड़त रसूल के, दुस्मन बैठा दिल में ॥१८॥

आखिर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन ।
 ए समझोगा बेवरा, सोई महंमद दीन ॥१९॥
 जो कछू कह्या महंमदे, ईसे भी कह्या सोए ।
 ए माएने सो समझहीं, जो अरवा अर्स की होए ॥२०॥
 सात लोक तले जिमी के, मृत लोक है तिन पर ।
 इंद्र रुद्र ब्रह्मा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर ॥२१॥
 निराकार बैकुण्ठ पर, तिन पर अछर ब्रह्म ।
 अछरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम ॥२२॥
 ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत ।
 इलम एकै विध का, दोऊ की एक सरत ॥२३॥
 ईसे महंमद मेंहेदी का, इन तीनों का एक इलम ।
 हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम ॥२४॥
 दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए ।
 हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावे ले ॥२५॥
 करम कांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद ।
 जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद ॥२६॥
 हिंदू न माने कौल महंमद, न सरीयत मुसलमान ।
 यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान ॥२७॥
 और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत ।
 दे साहेदी महंमद की, करे इमामत^१ ॥२८॥
 ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक ।
 दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक ॥२९॥
 पेहेले लिख्या फुरमान^२ में, आवसी ईसा इमाम हजरत ।
 मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत ॥३०॥

वेदों कह्या आवसी, बुध ईश्वरों का ईस ।
 मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस ॥३१॥
 बुध ब्रह्मसृष्टी वास्ते, आवसी कह्या वेद ।
 ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद ॥३२॥
 जो नेत नेत कह्या निगमे^१, सब लगे तिन सब्द ।
 माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद ॥३३॥
 पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़ ।
 पाई न हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़ ॥३४॥
 वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे न मन अकल ।
 कहे कतेब छोड़ सुरिया को, आगे पोहोंचे न अर्स असल ॥३५॥
 निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम ।
 सो ए करूँ सब जाहेर, रूहअल्ला के इलम ॥३६॥
 कहूँ ईसे के इलम की, जो है हकीकत ।
 हक बका अर्स उमत, जाहेर करी मारफत ॥३७॥
 नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम ।
 सबमें उमत और दुनियाँ, सोई खुदा सोई ब्रह्म ॥३८॥
 लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक ।
 वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक ॥३९॥
 तीन सृष्ट कही वेद ने, उमत तीन कतेब ।
 लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब ॥४०॥
 दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक ।
 वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक^२ ॥४१॥
 जो कछू कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद ।
 दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद ॥४२॥

बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन ।
 चलन जुदा कर दिया, ताथें समझ न परी किन ॥४३॥
 ताथें हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊँ दोए ।
 नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोए ॥४४॥
 विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकार्ल ।
 जबरार्इल जोस धनीय का, रूद्र तामस अजरार्इल ॥४५॥
 बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासे बाँधे करम ।
 ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम ॥४६॥
 वेदें नारद कह्यो मन विष्णु को, जाको सराप्यो^१ प्रजापत^२ ।
 राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत ॥४७॥
 दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत ।
 सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत ॥४८॥
 अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत ।
 बीच तौहीद^३ राह छुड़ाए के, दाएं बाएं बतावत ॥४९॥
 सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह ।
 एही दुस्मन दुनी का, जिन मारी सबों की राह ॥५०॥
 मलकूत कह्या बैकुंठ को, मोहतत्त्व अंधेरी पाल ।
 अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल ॥५१॥
 ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम ।
 ठौर अछर सदरतुलमुंतहा, अरसुलअजीम सो धाम ॥५२॥
 श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम ।
 सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम ॥५३॥
 बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम ।
 उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम ॥५४॥

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख ।
अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख ॥५५॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥६४२॥

कंसे काला-गृह^१ में, किए वसुदेव देवकी बन्ध ।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध ॥१॥

नूह काफर की बन्ध में, रहे साल चालीस ।
बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस^२ ॥२॥

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार ।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नन्द द्वार ॥३॥

मलकूत से फरिस्ता, नूर समझाया आए ।
नसीहत कर पीछा फिर्या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए ॥४॥

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान ।
सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान ॥५॥

महत्तरों^३ की कोम में, जित हूद^४ कील^५ सिरदार ।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार ॥६॥

खेल हुआ जो लैल में, तकरार जो अब्वल ।
उतरीं रूहें फरिस्ते, अरस के असल ॥७॥

सात रात आठ दिन का, सुकें कह्या इन्द्र कोप ।
भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृतलोक ॥८॥

तब गोवरधन तले, स्यामें राख्यो गोकुल ।
जल प्रले के फिरवले^६, अंदर न हुआ दखल ॥९॥

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद महत्तर ।
राखी रूहें कोहतूर^७ तले, डूब मुए काफर ॥१०॥

हूद कह्या नंदजीय को, टापू बृज अखंड ।
 कोहतूर गोवरधन कह्या, न्यारा जो ब्रह्मांड ॥११॥
 जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लई बुलाए ।
 सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए ॥१२॥
 समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढ़ाए ।
 सो स्याम चिराग^१ महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोंचाए ॥१३॥
 वेदें कह्या स्याम बृज में, आए नन्द के घर ।
 पीछे आए रास में, इत हुई नहीं फजर ॥१४॥
 कालमाया इंड पेहेले रच्यो, जोगमाया रचियो और ।
 फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर ॥१५॥
 पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर ।
 तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर ॥१६॥
 किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए ।
 स्याम बेटा नूह नबी का, फिर्या किस्ती पार पोहोंचाए ॥१७॥
 कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान ।
 मोमिन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान ॥१८॥
 कह्या वेदें कृष्ण अवतार की, पेहेले आए बृज के माहें ।
 रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहाँए ॥१९॥
 आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल ।
 दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥२०॥
 कहे महंमद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार ।
 लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियां सब दीदार ॥२१॥
 लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत ।
 सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत ॥२२॥

ब्रह्मसृष्टी सखियां स्याम संग, खेले बृज रास के मांहे ।
 ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहांए ॥२३॥
 ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार ।
 सो ए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार^१ गुजार ॥२४॥
 कालमाया जोगमाया, बीच कहे प्रले दोए ।
 एह खेल भया तीसरा, माएने बुध जी बिना न होए ॥२५॥
 एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान ।
 प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान ॥२६॥
 पेहेले भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर^२ ।
 स्याम सख्य ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर ॥२७॥
 दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम ।
 स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम ॥२८॥
 हलधर आत्म नारायन, जो आया हिंदुस्तान ।
 साहेब कह्या हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान ॥२९॥
 बेटा नूह नबीय का, कह्या हिंद का बाप हिसाम ।
 सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम ॥३०॥
 स्याम रास से बरारब^३, ल्याया साहेब का फुरमान ।
 हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान ॥३१॥
 सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन ।
 कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन ॥३२॥
 बाप फारस^४ रूम आरब का, कह्या फुरमाने स्याम ।
 फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम ॥३३॥
 वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुधजी ।
 खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी ॥३४॥

ए खिताब महंमद मेंहेदी पे, जाकी करे मुसाफ सिफत ।
 सो महंमद मेंहेदी खोलसी, आखिर अपनी बीच उमत ॥३५॥
 अवतार तले विष्णु के, विष्णु करे स्याम की सिफत ।
 इन बिध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत ॥३६॥
 लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम ।
 ए मुकरर^१ सब महंमद पे, सो महंमद कह्या जो स्याम ॥३७॥
 तीर्थकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार ।
 तो बुजरकी इत कहाँ रही, जो कायम न खोले द्वार ॥३८॥
 अवतारों इत क्या किया, जो दर्ई न बका की सुध ।
 तो लो द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजया-अभिनंद-बुध ॥३९॥
 सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला कलाम ।
 उमत सबे रानी^२ गई, इनों किन को दिया पैगाम ॥४०॥
 लिखी बड़ाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत^३ ।
 अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत ॥४१॥
 करी किताबें मनसूख^४, हुए जमाने रद ।
 ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लो आखिर आए महंमद ॥४२॥
 रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास ।
 ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी प्रकास ॥४३॥
 मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायन ।
 रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान ॥४४॥
 रात कही कदर की, बोहोत बड़ी है सोए ।
 फिरत चिरागें^५ इनमें, चांद सूर ए दोए ॥४५॥
 ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म ।
 दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्टी लेसी कदम ॥४६॥

मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर ।
 एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर ॥४७॥
 ब्रह्मसृष्टी प्रेम लच्छ में, कुमारिका ईश्वर ।
 तीसरी जीवसृष्ट दुनियां, वेद केहेत यों कर ॥४८॥
 खास रूहें उमत की, और मुतकी^१ दीन इसलाम ।
 और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम ॥४९॥
 ब्रह्मसृष्टी अछरातीत से, ईस्वरी सृष्ट अछर से ।
 जीवसृष्ट बैकुंठ की, ए जो गफलत में ॥५०॥
 रूहें उमत कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती ।
 और आम खलक तारीक^२ से, सो सब कुंन से मलकूती ॥५१॥
 बुध नेहकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर ।
 असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर ॥५२॥
 विजिया-अभिनंद-बुध जी, लिखी एही सरत ।
 ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त ॥५३॥
 ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन ।
 ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन ॥५४॥
 चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, दूढ़ थके त्रैगुन ।
 कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन ॥५५॥
 करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत ।
 देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत ॥५६॥
 बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत विध सब ।
 बड़ाई ब्रह्मसृष्ट की, ए जो लीला होत है अब ॥५७॥
 साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत ।
 सिफत उमत मोमिनो, ए जो जाहेर होत आखिरत ॥५८॥

विजिया-अभिनंद-बुधजी, और नेहेकलंक अवतार ।
 कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार ॥५९॥
 महंमद मेंहेदी आवसी, और ईसा हजरत ।
 ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत ॥६०॥
 अखण्ड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म ।
 बुध विजिया-अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम ॥६१॥
 भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक ।
 काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक ॥६२॥
 कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, पर ए लीला न हुई कब ।
 विलास बड़ो ब्रह्मसृष्ट में, सुख नयो पसरसी अब ॥६३॥
 कई दुनी हुई कई होएसी, पर कबूं न जाहेर उमत ।
 दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज कयामत ॥६४॥
 रसम करम कांड की, हुती एते दिन ।
 अब इलम बुधजीयके, दर्ई सबों प्रेम लछन ॥६५॥
 सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन ।
 महंमद मेंहेदी जाहेर होए के, इस्क दिया सबन ॥६६॥
 पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्ट ।
 याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट ॥६७॥
 पेहेचान महंमद रूहअल्ला, और पेहेचान मोमिन ।
 तोरा^१ सबों पर इनका, यों कहे कुरान रोसन ॥६८॥
 तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन ।
 बृज रास प्रभात को, ए बुधजी को रोसन ॥६९॥
 ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्ट में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद ।
 प्रेम लच्छ दोऊ कहे, किए जाहेर बुधजीएँ भेद ॥७०॥

साहेब के संसार में, आए तीन सरूप ।
 सो कुरान यों केहेवहीं, सुंदर रूप अनूप ॥७१॥
 एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढ़ापन ।
 सुंदरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन ॥७२॥
 ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन ।
 यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन ॥७३॥
 ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन ।
 खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन ॥७४॥
 श्री कृष्णजीएँ बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम ।
 सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम ॥७५॥
 चौथा सरूप ईसा रूहअल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम ।
 पाँचमां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम ॥७६॥
 ए भी पाँच सरूप का, है बेवरा मांहे कुरान ।
 जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान ॥७७॥
 एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान ।
 सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान ॥७८॥
 वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन ।
 एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन ॥७९॥
 हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम ।
 कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम ॥८०॥
 मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम ।
 लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम ॥८१॥
 ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान^१ ।
 किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान^२ ॥८२॥

यों लड़ के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए ।
 रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए ॥८३॥
 यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत ।
 ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत ॥८४॥
 यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम ।
 सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम^१ ॥८५॥
 सुर असुर अक्याप^२ के, करत लड़ाई दोए ।
 ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए ॥८६॥
 द्वेष जो लाग्या पेड़ से, सब सोई रहे पकर ।
 साधो द्वेष मिटावने, उपाय थके कर कर ॥८७॥
 कई अवतारों बल किए, कई बल किए तीर्थकर ।
 द्वेष अद्यापी^३ ना मिट्या, कई फरिस्ते पैगंमर ॥८८॥
 साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन ।
 सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन ॥८९॥
 ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और ।
 वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर ॥९०॥
 दो बेटे रूह अल्लाह के, एक नसली और नजरी ।
 भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द^४ पैगंमरी ॥९१॥
 वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान ।
 मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान ॥९२॥
 मेटन लड़ाई बन्दन^५ की, और जादे^६ पैगंमर ।
 धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त धर ॥९३॥
 जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध ।
 मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध ॥९४॥

सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद ।
 सुख तो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद ॥९५॥
 वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल ।
 मगज माएने जाहेर किए, माहें गुझ हुते जो बोल ॥९६॥
 अंजील जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान ।
 ए माएने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान ॥९७॥
 ए कागद उमत ब्रह्मसृष्ट को, सोभा आई तिन पास ।
 माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास ॥९८॥
 जब हक हादी जाहेर भए, और अर्स उमत ।
 सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत ॥९९॥
 कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल ।
 फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल ॥१००॥
 रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन ।
 रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन ॥१०१॥
 हाँसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन ।
 मेला अति बड़ा हुआ, आखिर सुख सबन ॥१०२॥
 बिना सुख कोई न रह्या, सब मन काम पूरन ।
 अंधेरी कछू न रही, भए चौदे तबक रोसन ॥१०३॥
 मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन ।
 ए सब बीच द्वैत^१ के, निराकार निरंजन सुन ॥१०४॥
 वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच ।
 सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच ॥१०५॥
 अछरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फरिस्तों नूर ।
 घर जबरईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर ॥१०६॥

और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स ।
 रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस ॥१०७॥
 ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुधजी आए ।
 ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए ॥१०८॥
 भिस्त दर्ई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट ।
 कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट ॥१०९॥
 दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईस्वरी कही ।
 अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही ॥११०॥
 और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम ।
 इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम ॥१११॥
 मुक्त दर्ई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर ।
 रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर^१ ॥११२॥
 करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल ।
 सो बुधजीएँ मारया, जो त्रैलोकी का काल ॥११३॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥७५५॥

कुरान की कहूं

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत ।
 मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइए मारफत ॥१॥
 बिध सारी यामें लिखी, जाथें न रहे अग्यान ।
 माएने ऊपर के लेय के, कर बैठे अपना कुरान ॥२॥
 आरबों सों ऐसा कह्या, कागद ए परवान ।
 आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान ॥३॥
 कागद^२ में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब ।
 अंदर अर्थ खोलसी, सब जाहेर होसी तब ॥४॥

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन ।
 माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन ॥५॥
 धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए ।
 साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए ॥६॥
 नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत ।
 फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित ॥७॥
 गुझ अर्थ यामें लिखे, सो समझे कैसे कर ।
 अर्थ ऊपर का लेय के, अकस^१ लेत दिल धर ॥८॥
 बड़ी सोभा अहेल^२ किताब की, लिखी मिने कुरान ।
 सो आरब जाने आपको, ए जो धनी फुरमान ॥९॥
 अहेल किताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान ।
 फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान ॥१०॥
 एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार ।
 ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरो पार ॥११॥
 एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब ।
 फैल न देखें अपने, लिया मोमिनो का मरातब^३ ॥१२॥
 सहूर न करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक ।
 और बहत्तर नारी^४ कहे, पर पावें नहीं विवेक ॥१३॥
 लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर ।
 परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर ॥१४॥
 कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल ।
 माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल ॥१५॥
 एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत ।
 सो धनी आए जहूदों^५ मिने, ओ आरबों में दूढ़त ॥१६॥

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें ।
जाहेर परस्त^१ जो आरब, सो इसारत समझत नाहें ॥१७॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥७७२॥

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए
बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन ।
कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन ॥१॥
कई पढ़ पढ़ काजी हुए, कई आलम^२ आरिफ^३ ।
माणे मगज मुसाफ के, किन खोल्या ना एक हरफ ॥२॥
लिख्या जाहेर कुरान में, और माजजे^४ सब रद ।
सांचा माजजा इमाम पे, जो ले उतर्या अहमद ॥३॥
करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए ।
लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए ॥४॥
पढ़्या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब ।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माणे सब ॥५॥
ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान ।
रूह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान ॥६॥
जो लों माणे मगज न पाइया, तो लों पढ़्या न किन कुरान ।
किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान ॥७॥
जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान ।
यों जंजीरां मुसाफ की, कई विध करी बयान ॥८॥
अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बुजरक ।
सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक ॥९॥
हुकम हुआ तिन को, कर सिजदा आदम पर ।
माणे मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर ॥१०॥

लानत हुई तिन को, हुआ गले में तौक^१ ।
यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक ॥११॥
तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस गेहूं खिलाए ।
काढ्या प्यारी भिस्त से, दुस्मन संग लगाए ॥१२॥
ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल ।
तो फुरमाया ना करें, वे खैंचे पेड़ असल ॥१३॥
ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान ।
सो ए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान ॥१४॥
दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएनें जाहेर ।
अंदर अर्थ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखिर ॥१५॥
निसान कहे इन वास्ते, सो बांधें कौल पर हद ।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद ॥१६॥
कलाम अल्ला के माएने, सो भी कही इसारत ।
ए नसल आदम^२ हवाई^२, क्यों पावे दिन आखिरत ॥१७॥
माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए ।
सोई हरफ जबरईल, गया सब चटाए ॥१८॥
नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर ।
ईसा मेंहेदी महंमद, आए हिंद में बरस्या नूर ॥१९॥
नूर खुदा रोसन हुआ, खैंच छूटी सब तरफ ।
लेत माएने ऊपर के, सो रह्या न कोई हरफ ॥२०॥
महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम ।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम ॥२१॥
अल्लफ कह्या महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम ।
मीम मेंहेदी पाक से, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ॥२२॥

महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम ।
बुध जबरईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम ॥२३॥
माणे इन मुसाफ के, कलाम अल्ला का कौल ।
ईसे के इलम से, दर्ई इसारतें सब खोल ॥२४॥
बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए ।
बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड़्या कोए ॥२५॥
कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज^१ ।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज^२ ॥२६॥
चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन ।
अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन ॥२७॥
ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान ।
माणे मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान ॥२८॥
काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए ।
तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए ॥२९॥
दाभ-तूल-अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर ।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर ॥३०॥
सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन ।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन ॥३१॥
उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर ।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर ॥३२॥
कही दाभा^३ वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान^४ ।
जोलों स्याम बरारब ना हतें, ना रसूल खबर फुरमान ॥३३॥
जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन ।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन ॥३४॥

ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर ।
 सो नूर फिर्या खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर ॥३५॥
 सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक^१ ।
 तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक ॥३६॥
 मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह ।
 यों मसरक^१ और मगरब^२, दोनों दुरस्त कह्या ॥३७॥
 रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब ।
 सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब ॥३८॥
 नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब ।
 जाहेरी ढूँढ़ें सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब ॥३९॥
 ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद ।
 काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद ॥४०॥
 ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ ।
 आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ ॥४१॥
 दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर ।
 ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर ॥४२॥
 ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल ।
 जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रहेसी किन हाल ॥४३॥
 आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर ।
 फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर ॥४४॥
 गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर ।
 तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर ॥४५॥
 जब जहूर^३ जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर ।
 तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर ॥४६॥

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए ।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए ॥४७॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥८१९॥

सूरत^१ मीजान^२ की

केहेती हों उमत^३ को, सुनसी सब संसार ।
मकसूद^४ तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार ॥१॥
फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक ।
ढूढ़ ढूढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक ॥२॥
वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम ।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम ॥३॥
मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूहअल्ला मिले मुझ ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ ॥४॥
इलम दिया मोहे लदुन्नी, आई असल अकल ।
सेहेरग से नजीक, पाया अर्स असल^५ ॥५॥
और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत ।
पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत ॥६॥
पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम ।
सक जरा ना रही, पाया कायम^६ आराम ॥७॥
अब करूं बका जाहेर, वास्ते अर्स उमत के ।
कहूं अर्स और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए ॥८॥
अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अर्स के ।
ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे ॥९॥
नासूत और मलकूत का, निमूना देखकर ।
ए बल दिल में लेय के, देखो अर्स जानवर ॥१०॥

एक जानवर अर्स का, मैं तौल्या तिन का बल ।
 क्यों कहूं तफावत^१, ओ फना ए नेहेचल ॥११॥
 लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत^२ बल बुद्ध जेता ।
 दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदर में एता ॥१२॥
 ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत ।
 आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत ॥१३॥
 कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते ।
 ए जवाब है तिनको, देखो पटंतर^३ ए ॥१४॥
 आगूं कायम अर्स के, है चौदे तबक यों कर ।
 ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर ॥१५॥
 जो कछु पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना ।
 सो क्यों कही जाए कायम को, जो वस्त है झूठ फना ॥१६॥
 तो कह्या सब्दातीत को, हद सब्द पोहोंचत नाहें ।
 ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें ॥१७॥
 कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित ।
 एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं तार्थें दुख पावत ॥१८॥
 मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त ।
 इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत ॥१९॥
 तार्थें सिफत मैं क्यों करूं, अर्स अजीम की ख्वाब में इत ।
 एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित ॥२०॥
 तार्थें अर्स और दुनी के, तफावत जानवर ।
 कायम और फना की, क्यों आवे बराबर ॥२१॥
 चुप किए भी न बने, समझाए ना बिना मिसल^४ ।
 पसु पंखी अर्स और खेल के, देखो तफावत बल ॥२२॥

इत अंगद बाल सुग्रीव, गरूड़ जाबूं हनुमान ।
 ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान ॥२३॥
 लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर ।
 राम कृष्ण इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर ॥२४॥
 अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत ।
 लोक जिमी आसमान के, ऐ देखो तफावत ॥२५॥
 बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर ।
 गरूड़ बल ऐसा रखे, चले विष्णु मन पर ॥२६॥
 देख बल इन खावन्द का, जो मलकूत में बसत ।
 कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बन्दों को बकसत ॥२७॥
 ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर ।
 ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठें मिटें सागर ॥२८॥
 नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर ।
 सो मलकूत के एक खिन में, कई कोट जात मर मर ॥२९॥
 नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर ।
 तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर ॥३०॥
 दरिया ला मकान^१ का, तिनकी लेहेर मलकूत^२ ।
 तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत^३ ॥३१॥
 ए तले ला मकान के, दोऊ फना के मांहे ।
 ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहे ॥३२॥
 विष्णु ब्रह्मा रूद्र की, साहेबियां बुजरक ।
 ए चौदे तबक की दुनियाँ, जाने याही को हक ॥३३॥
 बिना हिसाबें उमतें, करें सिफतें अनेक ।
 सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक ॥३४॥

खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन ।
 कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुन ॥३५॥
 ए जो खावंद मलकूत के, सो दूढ़ें हक को अटकल^१ ।
 रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल ॥३६॥
 ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फरिस्ते समेत ।
 सिफत कर कर आखिर, कहे नेत नेत नेत ॥३७॥
 करें कोट मलकूती सिफतें, देख नूरजलाल^२ कुदरत ।
 तो पट आड़ा ना टरे, कई कर कर गए सिफत ॥३८॥
 ए सबें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल ।
 ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल ॥३९॥
 इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से ।
 यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किन ने ॥४०॥
 अब देखो बल महंमद का, दर्ई दुनियां को सरीयत ।
 कह्या आखिर रब आवसी, खोलसी हकीकत ॥४१॥
 आवसी उमत अर्स से, ए खेल को देखन ।
 करें हक को जाहेर, सब का एह कारन ॥४२॥
 कायम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल ।
 करें उमत अर्स की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल ॥४३॥
 जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए ।
 भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए ॥४४॥
 ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए ।
 तो आखिर आए सबन को, दर्ई हैयाती पोहोंचाए ॥४५॥
 बारे हजार उमत की, रूहें जो इप्तदाए^३ ।
 जबरईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए ॥४६॥

आप बैठे बीच में, ले अपनी तीन सूरत ।
 ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोचत ॥४७॥
 ऐसा जोस बल महंमद का, जबरईल जानवर ।
 नासूत मलकूत ला परे, पोहोचे अपने घर ॥४८॥
 एह बल महंमद के, जानवर का जान ।
 दूजी गिरो फरिस्ते, पोहोचाई नूर मकान ॥४९॥
 गिरो फरिस्ते इत रहे, जबरईल मकान ।
 एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान ॥५०॥
 जो रूहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत ।
 ले पोहोचे नूरतजल्ला^१, महंमद तीन सूरत ॥५१॥
 खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन ।
 इतहीं बैठे पोहोचहीं, अपने कायम वतन ॥५२॥
 ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबरईल जोस देत ।
 ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत ॥५३॥
 क्यों कहूं बल जबरईल, जिन सिर हैं महंमद ।
 ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद ॥५४॥
 कायम जिमी अर्स की, सांची जो साबित ।
 पसु पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत ॥५५॥
 कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक ।
 तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक ॥५६॥
 बिना हिसाबें जानवर, पसु बिना हिसाब ।
 ए बल दिल में लेय के, तौलो निमूना ख्वाब ॥५७॥
 कोट इंड की दुनीय का, कूवत^२ बल हिकमत ।
 अपार अर्स के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत ॥५८॥

अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन ।
 झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुन ॥५९॥
 ए बल सब्दातीत को, सो सांचे हैं सूर ।
 और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर^१ ॥६०॥
 सांच झूठ पटंतरो^२, कबहूँ कह्यो न जाए ।
 सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों तराजू तौलाए ॥६१॥
 मलकूत और नूर के, क्यों कहूँ तफावत ।
 झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत ॥६२॥
 कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए ।
 सो नूर नजर देख के, एक खिन में दें उड़ाए ॥६३॥
 ओ जाने हम कदीम^३ के, आद हैं असल ।
 कई चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल ॥६४॥
 कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत^४ ।
 ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत ॥६५॥
 झूठ तो कछुए है नहीं, सांच कायम साबित ।
 यों अर्स और दुनीय के, कौन निमूना इत ॥६६॥
 बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें ।
 तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्याहें ॥६७॥
 ऐसे अति जोरावर, जो रहेत हक हजूर ।
 तो मुख से सब्द ना केहे सकों, इन बल हक जहूर ॥६८॥
 जो बसत अर्स जिमिँ, या नजीक या दूर ।
 रात दिन इन के अंग में, बरसत हक का नूर ॥६९॥
 यों अर्स के जानवर, सो सारे ही पेहेलवान ।
 बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरवान ॥७०॥

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नहीं सुमार ।
 नजरों अमी^१ रस पीवत, अर्स खावंद सींचनहार ॥७१॥
 कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार ।
 जिनका सका^२ साहेब, पल पल सींचनहार ॥७२॥
 ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूँके देवे तोड़ ।
 तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड़ ॥७३॥
 उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर ।
 उड़ जाएँ इन के वाउ सों, जब ए उठावें पर ॥७४॥
 ए निमूना अर्स ख्वाब^३ का, देखो तफावत ।
 देखो अकल असल की, जो होवे अर्स उमत ॥७५॥
 उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक ।
 देने पेहेचान गिरो को, यासे जाने हक ॥७६॥
 पावने बुजरकी अर्स की, और बुजरकी खुदाए ।
 पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इप्तदाए ॥७७॥
 सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे ।
 अर्स लज्जत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए ॥७८॥
 सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
 विचार देखो हादीय की, वानी ले दिल मों ॥७९॥
 गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नाहें ।
 सांच निमूना दूसरा, कोई नहीं अर्स के माहें ॥८०॥
 जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक ।
 इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख ॥८१॥
 जो कछू अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए ।
 और खेलौने बगीचे, सो सब जात के इप्तदाए ॥८२॥

न अर्स जिमिँ दूसरा, कोई और धरावे नाउ ।
 ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नहीं खुदा बिन काहं ॥८३॥
 और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए ।
 एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इप्तदाए^१ ॥८४॥
 और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए ।
 ए खेल है खावंद के, ए जो चली कतारें जाए ॥८५॥
 ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नाहें ।
 ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए ॥८६॥
 ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार ।
 सो ला ही लिए जात हैं, ज्यों चले चींटी हार ॥८७॥
 बड़ी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक ।
 लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक ॥८८॥
 झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल ।
 खेल देखे पाइयत हैं, खुद खावंद का बल ॥८९॥
 असल आदिमयों मिने, कोई पाइए उमत का एक ।
 ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक ॥९०॥
 अब कहूं मैं तिन को, अर्स खावंद की बात ।
 खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात ॥९१॥
 जो उतरे हैं अर्स अजीम से, रूहें और फरिस्ते ।
 कहिए जात खुदाए की, असल हैं अर्स के ॥९२॥
 ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए ।
 एही हकुल्यकीन^२, जो अर्स दरगाह के होए ॥९३॥
 सो फुरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अर्स से ।
 उतरते अरवाहों सों, कौल किया हक ने ॥९४॥

कह्या उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रब-कुंम ।
 फेर कह्या अरवाहों ने, वले न भूलें हम ॥९५॥
 ए देत अर्स निसानियां, याद आवसी तिन ।
 सरत करी खावंद ने, उतरते अर्स रूहन ॥९६॥
 अब जो असल उमत का, ताए देऊँ अर्स निसान ।
 इन विध देऊँ साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान ॥९७॥
 कलाम अल्ला की साहेदी, और हदीसें महंमद ।
 तुमें कहूं तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद ॥९८॥
 नूर आवें दीदार को, लेने सुख सुभान ।
 ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान ॥९९॥
 नूरें चाह्या दिल में, देखूं इस्क रूहन ।
 तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन ॥१००॥
 खेल किया तुम वास्ते, देखो दिल में आन ।
 ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान ॥१०१॥
 विचारो रूहें अर्स की, जो देखाई झूठ नकल ।
 देखो तफावत दिल में, ले अपनी असल अकल ॥१०२॥
 ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम ।
 पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम ॥१०३॥
 ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग ।
 अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग ॥१०४॥
 कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल ।
 तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल ॥१०५॥
 इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और ।
 कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर ॥१०६॥

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन ।
 ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन ॥१०७॥
 महामत कहे ए मोमिनो, तुम हो बका के ।
 हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते ॥१०८॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥१२७॥

अर्स अजीम की हक मारफत-महाकारन

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम ।
 जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम ॥१॥
 और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए ।
 सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए ॥२॥
 हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत ।
 नूर मकान जाहेर करूं, ए एकै जात सिफत ॥३॥
 महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर ।
 ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर ॥४॥
 ए जो सदरतुल-मुंतहा^१, ए है कायम^२ अर्स ।
 ए जात सिफात^३ एकै, ए हैं अरस-परस ॥५॥
 नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात ।
 और बाग जोए^४ हौज कौसर, ए साहेबी अर्स सिफात ॥६॥
 पार ना अर्स जिमी का, ना बागों का पार ।
 पार ना पसु पंखियन को, ना कछू खेल सुमार ॥७॥
 पार न बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए ।
 पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए ॥८॥
 एक पात बिरिख^५ को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर ।
 ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर ॥९॥

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन ।
 सो वास्ता^१ कहूं इन भांत सों, ज्यों होए सबे रोसन ॥१०॥
 नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम ।
 होए पल में पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम ॥११॥
 अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात ।
 बिना कुदरत^२ कादर^३ की, क्यों पाइए सिफात ॥१२॥
 इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत ।
 ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत ॥१३॥
 खेल में कई मुद्दत, होत है दुनियां को ।
 कई कोट होत पैदा फना, नूर के निमख मों ॥१४॥
 जब कछू पैदा ना हुआ, जिमी या आसमान ।
 सो हुकम तब ना हुआ, जिन थें उपजी जहान ॥१५॥
 अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते ।
 फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फरिस्ते ॥१६॥
 ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान ।
 चौदे तबक भई दुनियां, आखिर फना निदान ॥१७॥
 ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत ।
 आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत ॥१८॥
 अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात ।
 करसी दुनियां कायम, ए महंमद की सिफात^४ ॥१९॥
 रूह अल्ला उतरे अर्स से, होए काजी लेसी हिसाब ।
 दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब ॥२०॥
 महंमद मेंहेदी आवसी, करसी इमामत ।
 बका पर सिजदा गिरोह^५ को, करावसी आखिरत ॥२१॥

सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें ।
 किस वास्ते हुकम किया, ए ना कह्या किन ने ॥२२॥
 अब देखो दुनियां जाहेरी, कर्म कांड सरीयत ।
 इनके इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत ॥२३॥
 दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक^१ ।
 तो ए हुकम किन ने किया, जो सूरत नहीं हक ॥२४॥
 न ठौर ठेहेरावें अर्स को, ना हक की सूरत ।
 हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित ॥२५॥
 हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर ।
 रद-बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करी हजूर ॥२६॥
 हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार ।
 तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार ॥२७॥
 और तीस गुझ रखो, वे आखिर पर मुद्दार ।
 सो हम आए के खोलसी, अर्स बका के द्वार ॥२८॥
 सो साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल ।
 भिस्त दरवाजे कायम^२, सब को देसी खोल ॥२९॥
 काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार ।
 तो भी ईमान न दुनी को, जो एती करी पुकार ॥३०॥
 ऐसा ईमान इन दुनी का, कहे महंमद को बरहक^३ ।
 और महंमद के फुरमाए में, फेर तिन में ल्यावें सक ॥३१॥
 महंमद बातें हक सों, पोहोंच के करी हजूर ।
 दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर ॥३२॥
 और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तकरार^४ तीन ।
 हादी हुकमें रूहें फरिस्ते, बीच नाजल^५ इसलाम दीन ॥३३॥

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर ।
 गिरो उतरी अर्स से, जो चढ़ी किस्ती पर ॥३४॥
 दो तकरार पेहेले कहे, जो गुजरे मांहे लैल ।
 तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥३५॥
 दसमी लग रोज रब का, सो दुनी के साल हजार ।
 कह्या बेहेतर^१ महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार ॥३६॥
 महंमद मेंहेदी ईसा नाजल, असराफील जबरईल ।
 रूहे फरिस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील ॥३७॥
 रहे साल चौरासी लैल में, तिन उपर हुई फजर ।
 अग्यारें सदी मिने, मेरी बातून^२ खुली नजर ॥३८॥
 चौदे तबकों न पाइया, अर्स हक का कित ।
 सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत ॥३९॥
 अर्स ना चौदे तबक में, सो लिए इलम ईसा के ।
 नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अर्स बैठाए ले ॥४०॥
 और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम ।
 तूं रूह हैं अर्स अजीम की, तुझ को दिया हुकम ॥४१॥
 गिरो आई लैल के खेल में, सो तुमें मिलसी आए ।
 दिल साफ इनों के करके, अर्स में लीजे उठाए ॥४२॥
 ए बात मैं दिल में लई, तब महंमद हुए मेहेरबान ।
 हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान ॥४३॥
 सब सुध भई अर्स की, हुई हक सों निसबत ।
 गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अर्स न्यामत^३ ॥४४॥
 ए सुकन पेहेले लिखे, बीच कतेब वेद ।
 सो ए करत हों जाहेर, जो दिया दोऊ हादियों भेद ॥४५॥

रूहें बेनियाज^१ थीं, बीच दरगाह बारे हजार ।
 जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार ॥४६॥
 सुध नहीं दुख सुख की, ना सुध विरह मिलाप ।
 ना सुध बुजरक अर्स की, खबर न खावंद आप ॥४७॥
 साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर ।
 ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर ॥४८॥
 ना सुध दोस्त ना दुस्मन, ना सुध नफा नुकसान ।
 ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान ॥४९॥
 तिस वास्ते खेल देखाइया, ए बात दिल में आन ।
 झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान ॥५०॥
 सांची साहेबी हक की, कोई नहीं दूजा और ।
 झूठ नकल देखे बिना, पावे ना अर्स ठौर ॥५१॥
 बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत^२ ।
 कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत ॥५२॥
 यों जान बीच बका मिने, दिल में ल्याए हक ।
 नूर-जलाल^३ रूहन को, देखें असल इस्क ॥५३॥
 और लिया ए दिल में, जो अरवाहें अर्स की ।
 दूजी बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥५४॥
 जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक ।
 तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक ॥५५॥
 असल होए जित अकेला, और होए नहीं नकल ।
 सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल ॥५६॥
 जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख ।
 ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख ॥५७॥

सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद के छूट ।
 सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ ॥५८॥
 दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए ।
 तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए ॥५९॥
 जित साहेब होवे एकला, ना साहेदी^१ दूजे बिन ।
 बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन ॥६०॥
 तो कह्या खुदा एक है, और महंमद कह्या बरहक ।
 सो न आवे ख्वाबी^२ दम पर, जो लो होए न रूहें बुजरक ॥६१॥
 ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम ।
 महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम ॥६२॥
 जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत ।
 अर्स रूहें फरिस्ते, हुई हक की मारफत ॥६३॥
 लिख्या था जो अब्वल, सो आए पोहोंची कयामत ।
 भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत ॥६४॥
 इन बिध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी ।
 देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥६५॥
 हकें देखाई अर्स साहेबी, हादी रूहों को यों कर ।
 दुई देखाई झूठ ख्वाब में, पावने पटंतर^३ ॥६६॥
 चढ़ना है नासूत^४ से, तिन ऊपर है मलकूत^५ ।
 तिन पर ला-मकान^६ है, तिन पर नूर बका^७ साबूत ॥६७॥
 कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत ।
 खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत ॥६८॥
 कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत ।
 नूर सिफत कर कर गए, पर आगे ना पोहोंचत ॥६९॥

वेदें नाम धरे खेल के, पूत बंझा सींग ससक^१ ।
 आकास फूल इनको कह्या, एक जरा न रखी रंचक ॥७०॥
 कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला^२ ।
 ए कुंन केहेते हो गया, सो कयामत को फना ॥७१॥
 जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर ।
 इन की सहूर सुरिया लग, सो हकें पोहोंचे क्यों कर ॥७२॥
 कहे कबूतर खेल के, खेल सरीक^३ हक का ।
 हक हमेसा वेद कतेब में, खेल तीनों काल फना ॥७३॥
 एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें ।
 न सरीक न निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों माहें ॥७४॥
 खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक ।
 जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक ॥७५॥
 झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत ।
 ए झूठ खेल देखाइया, लेने हक लज्जत ॥७६॥
 कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल ।
 ऐसी नूर जलाल^४ की, कुदरत रखे बल ॥७७॥
 तिन से कायम होत है, सदरतुलमुंतहा जित ।
 होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत ॥७८॥
 सदरतुलमुंतहा^५ थें, आवत नूर-जलाल ।
 जित है अर्स अजीम, खावंद नूर-जमाल ॥७९॥
 सो नूर नूरतजल्ला^६ के, दायम आवे दीदार ।
 इन दरगाह में उमत, रूहें बारे हजार ॥८०॥
 एह मरातबा^७ रूहन का, जिन का हादी अहमद ।
 मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद^८ ॥८१॥

१. खरगोस । २. नाशवंत । ३. बराबरी का । ४. अक्षरब्रह्म । ५. अक्षरधाम । ६. पूर्ण ब्रह्म (अक्षरातीत) ।

७. बुजरकी । ८. एक ।

महामत कहे ए मोमिनो, देखो खसम प्यार ।
ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार ॥८२॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥१००९॥

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत ।
कौल किया था हक ने, सो आई कयामत ॥१॥

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत ।
फुरमान फकीरों सफकत^१, ले आवे दुनी बरकत ॥२॥

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारें सदी आखिर ।
जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर ॥३॥

आए लैल के खेलमें, लेने अर्स लज्जत ।
सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत ॥४॥

आपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नहीं सुमार ।
दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार ॥५॥

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत ।
हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दर्ई गफलत ॥६॥

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम ।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम ॥७॥

अर्स बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख ।
ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख ॥८॥

असल आराम हिरदे मिने, अर्स को अखंड ।
तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड ॥९॥

कायम हक के अर्स में, बैठे अपने ठौर ।
हक के इत वाहेदत^२ में, कोई नहीं काहूं और ॥१०॥

महामत कहे ए मोमिनो, इस्क लीजे हक ।
असल अर्स के बीच में, हक का नाम आसिक ॥११॥

॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥१०२०॥

किताब कुरानकी, इनमें एते बाब हैं-खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, मेयराजनामे का, खुलासा इसलाम का, भिस्त सिफायत का बेवरा, हक की सूरत का, नाजी फिरके का, रूहों की बिने, नूर-नूरतजल्ला, जहूरनामा, दोनामा, मीजान अर्स अजीम की महाकारन, मोमिन आए अर्स अजीम से, दोनामा के प्रकरण पांच किताब तमाम ।

चौपाइयों तथा प्रकरणों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ३६५, चौपाई ९४८२

॥ खुलासा सम्पूर्ण ॥